000001

ऑचलिक कार्यालय (मध्य), भोपाल
केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
(पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार)

ऑ.का.भो. / जन–जागरूकता / 2013–14 / 377 दिनांक : 04 जुलाई, 2013

प्रति,

सदस्य सचिव
केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
परिवेश भवन
पूर्वी अर्जुन नगर
दिल्ली – 110 032

ध्यानाकर्षणः प्रभारी जनसंपर्क अनुभाग

विषयः विश्व पर्यावरण दिवस 2013 की रिपोर्ट

महोदय,

आंचलिक कार्यालय, भोपाल द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस 2013 के उपलक्ष्य में अनेक कार्यक्रमों की श्रृंखला का आयोजन दिनांक 01 जून से 23 जून, 2013 के मध्य किया जिसकी विस्तृत रिपोर्ट संलग्न है । रिपोर्ट की सॉफ्ट कॉपी ई–मेल के माध्यम से pr.cpcb@nic.in पर भी प्रेषित की गई है ।

भवदीय,

(आर. एस. कोरी)
अपर निदेशक
एवं
ऑचलिक अधिकारी

संलग्नक : उपरोक्तानुसार ।

का./प्र.

"राजभाषा हिन्दी में पत्र व्यवहार का स्वागत है"

पताः तृतीय तल, सहकार भवन,
नॉर्थ टी.टी. नगर,, भोपाल – 462 003
टेलीफैक्सः 0755–2775587
ऑचलिक अधिकारी डायरेक्टः 0755–2775384
ईपीएबीएक्सः 0755–2775385, 2775386
ई–मेलः cpcb.bhopal@gmail.com, वेबसाइटः cpcb.nic.in

मुख्यालय :
परिवेश भवन,
पूर्वी अर्जुन नगर, दिल्ली - 110 032
दूरभाष : (011) 22305792
फैक्स : 91-11-22304948, 22307078, 22307079
ई–मेल : cpcb@alpha.nic.in

000002

विश्व पर्यावरण दिवस 2013

THINK·EAT·SAVE

WORLD ENVIRONMENT DAY 5 JUNE

IN PURSUIT OF CLEAN ENVIRONMENT

cpcb

ऑचलिक कार्यालय

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड

cpcb

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड

ऑचलिक कार्यालय – भोपाल

विश्व पर्यावरण दिवस 2013

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा स्टॉकहोम में दिनांक 05 जून से 16 जून, 1972 को विश्व को ह्यूमन इंवायरनमेंट, समान विचारधारा व सिद्धान्तों के प्रति प्रेरित करने तथा दिशा प्रदान करने के उद्देश्य से सदस्य देशों की एक बैठक का आयोजन किया था । इस बैठक में विश्व पर्यावरण के संरक्षण व भविष्य की चुनौतियों पर चर्चा की गई तथा बैठक में 113 देश के प्रतिनिधि, 19 शासकीय संस्थायें तथा 400 गैर सरकारी संस्थानों ने भाग लिया था ।

बैठक में पर्यावरणीय मुद्दों का निरन्तर चिंतन व जीवंतता बनाये रखने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 05 जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाने का संकल्प लिया गया ताकि विकास के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण एवं संतुलन की दिशा में निरंतर कार्य हो सके । पर्यावरणीय समस्या के नियंत्रण के साथ–साथ विकास करने के संबंध में बहुआयामी विकल्पों पर कार्ययोजनाओं के सक्षम क्रियान्वयन की दिशा में निरंतरता बनी रहे । प्रतिवर्ष विश्व पर्यावरण दिवस की मेजबानी किसी एक देश द्वारा की जाती है तथा प्रतिवर्ष पर्यावरण दिवस का एक विशेष स्लोगन दिया जाता है जो पर्यावरण के संरक्षण व संतुलन के दीर्घकालिक प्रभाव व जन–जागरूकता की दिशा में प्रेरणा देता है ।

इस वर्ष मंगोलिया विश्व पर्यावरण दिवस की मेज़बानी कर रहा है तथा इस वर्ष का स्लोगन 'थिंक–ईट–सेव–रिड्यूस अवर फूड प्रिंट' है जो मूलतः खाद्य सुरक्षा तथा अन्न की बर्बादी रोकने से संबंधित है । संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य व कृषि संस्थान की रिपोर्ट के अनुसार प्रतिवर्ष लगभग 1.3 बिलियन टन अन्न बर्बाद हो जाता है । साथ ही हर 7 में से 1 व्यक्ति प्रतिदिन भूखा सोता है तथा 20,000 से ज्यादा बच्चे 5 वर्ष से कम उम्र में ही भूख के कारण दम तोड़ देते हैं । जीवनशैली में आये असंतुलित बदलाव तथा खाद्य चयन के प्रति बढ़ती इच्छायें मूलतः खाद्य पदार्थो के हानि का कारण है ।

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के विविध कार्यो में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन जागरूकता भी एक महत्वपूर्ण कार्य है । इसके अन्तर्गत प्रदूषण स्तर को नियंत्रित रखने तथा पर्यावरण संरक्षण हेतु अनेक कार्य योजनाओं का संपादन किया जाता है इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आंचलिक कार्यालय, भोपाल द्वारा उपरोक्त स्लोगन को ध्यान में रखते हुये तथा जन जागृति के उद्देश्य से कार्यक्रमों की एक श्रृंखला का आयोजन 01 जून – 23 जून 2013 के मध्य किया गया । जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित कार्यक्रम संपन्न हुये :–

01. चित्रकला प्रतियोगिता :

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से अनेक कार्यक्रम मध्य प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के संयुक्त तत्वाधान में किये

गये । इस श्रृंखला का आरंभ 01.06.2013 को जवाहर बाल भवन में चित्रकला प्रतियोगिता के आयोजन से हुआ । इसमें विभिन्न आयु वर्ग व शिक्षण संस्थान के लगभग 150 बच्चों ने बहुत ही उत्साह के साथ भाग लिया तथा संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा वर्ष 2013 के पर्यावरण के स्लोगन 'सोचो–खाओ–बचाओ' विषय को प्रतिभागी बच्चों द्वारा अपनी कल्पना के माध्यम से चित्रांकित किया तथा विजेता प्रतिभागियों को पर्यावरण दिवस के अवसर पर पुरस्कृत किया गया ।

02. पॉलीथिन प्रयोग को रोकने हेतु जन जागृति :

इस श्रृंखला के अगले कार्यक्रम में दिनांक 02.06.2013 को न्यू मार्केट के पास स्थित हाट बाजार में जन सामान्य को पॉलीथिन अपशिष्ट के पर्यावरण पर पड़ने वाले दीर्घकालिक दुष्प्रभाव के बारे में जानकारी प्रदान की गई तथा जन सामान्य से पॉलीथिन के सीमित या उपयोग न करने के बारे में प्रोत्साहित किया गया । चूंकि हाट बाजार में भी पॉलीथिन का अधिक उपयोग होता है, जो अन्ततः घरेलू कचरे के माध्यम से नगरीय ठोस अपशिष्ट के रूप में परिवर्तित होता है । अतः स्त्रोत पर ही नियंत्रित करने के उद्देश्य से इस जन जागरूकता कार्यक्रम को आयोजित किया गया ।

उपरोक्त कार्यक्रम में पेम्फलेट बांटकर तथा लोगों से व्यक्तिगत रूप से चर्चा कर तथा सब्जी विक्रेताओं से अमानक पॉलीथिन क्रय न करने तथा उसमें सब्जी न बेचने हेतु प्रेरित किया गया । इस दौरान अनेक सब्जी विक्रेताओं से संवाद भी स्थापित किया गया

तथा यह जानने की कोशिश की गई कि किस कारण आज भी इतनी अधिक मात्रा के

पॉलीथिन का प्रयोग हो रहा है । इसमें विक्रेताओं द्वारा बताया गया कि यद्यपि वे यह जानते हैं कि पॉलीथिन से पर्यावरण को नुकसान होता है परन्तु विक्रेताओं द्वारा पॉलीथिन में सब्जी न देने पर अनेक ग्राहक उनसे सामान ही नही खरीदते हैं । अतः विवश होकर विक्रेता पॉलीथिन का उपयोग अपने उत्पाद को बेचने हेतु करते हैं ।

साथ ही पतली या अमानक पॉलीथिन का उपयोग इसलिये भी होता है कि यह अपेक्षाकृत सस्ती होती है तथा भार के हिसाब से प्रतिकिलो में संख्या अधिक होती है । पॉलीथिन अपशिष्ट के प्रति जन जागरूकता के अगले चरण में स्थानीय बाजार में जाकर एक सर्वे किया तथा यह पाया गया कि औसत 61% लोग कपड़े का थैला लेकर सब्जी लेने आते है तथा शेष 39% लोगो द्वारा पॉली बैग में ही सब्जी क्रय कर ले जाते हुये देखा गया । जो लोग सब्जी क्रय कर चुके थे उनमें मात्र 8%लोग ही ऐसे थे जिन्होंने पॉलीथिन बैग में बिल्कुल भी सामान क्रय नही किया था शेष सभी लोगों

ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पॉलीथिन बैग में सामान क्रय किया था । जन जागरूकता के दौरान अनेक ग्राहकों से भी चर्चा की गई तथा पॉली बैग में ही सामान लेने की क्या

विवशता है, इस बाबत् विचार जानने का प्रयास किया गया तथा यह पाया कि मुख्यतः घरों में सब्जी का संग्रहण फ्रिज में किया जाता है तथा इसमें इन्हें पृथक–पृथक रखने हेतु पॉलीथिन बैग का प्रयोग सुविधा हेतु किया जाता है तथा उपयोग के बाद यह घरेलू कचरे में परिवर्तित हो जाता है तथा यह चक्र ऐसे ही हर रोज चलता रहता है जो बाद में नगरीय अपशिष्ट के साथ फेंक दिया जाता है ।

यद्यपि सर्वे में यह भी ज्ञात हुआ कि सभी लोग पर्यावरण के प्रति बहुत सकारात्मक रवैया रखते है, परन्तु उचित विकल्प तथा कीमत के अभाव में अमानक वस्तुओं का जो कि पर्यावरण को प्रत्यक्ष रूप से नुकसान पहुंचाती है उनका उपयोग कर रहे है । अतः राज्य शासन स्तर पर इसके सुलभ व सस्ते विकल्प पर विचार किया जाना आवश्यक है ।

03. वृक्षारोपण कार्यक्रम :

दिनांक 03.06.2013 को केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड एवं मध्य प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड

के अधिकारियों द्वारा स्मृति वन में वृक्षा रोपण का कार्य किया तथा पूर्व में लगाये गये वृक्षों की जानकारी प्राप्त की तथा उन्हें पुनः सिंचित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति ने वृक्षारोपण किया तथा इसमें नीम, पीपल व सीताफल के पौधे का रोपण किया गया तथा इसके बाद स्मृति उद्यान में लगे सबसे पुराने वट वृक्ष के नीचे बैठक की गई जिसमें प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा किस तरह अधिक से अधिक वृक्षारोपण का कार्य संपादित किया जा सकता है, विषय पर चर्चा की गई । वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा पूर्व में

इस तरह के किये गये सार्थक प्रयासों के बारे में जानकारी प्रदान की तथा भविष्य में वृक्षारोपण कार्यक्रम को और अधिक व्यापक कैसे बनाया जा सकता है तथा सामाज के विभिन्न वर्गो को कैसे इसमें सहभागी बनाया जा सकता है, इस विषय पर भी चर्चा की गई।

04. स्थानीय संगोष्ठी :

दिनांक 04.06.2013 को स्थानीय समाचार पत्र, पत्रिका द्वारा पर्यावरण गोष्ठी का आयोजन किया गया था इसमें शासकीय, अशासकीय व समाज के प्रबुद्ध वर्ग के लोगों से पर्यावरण संरक्षण में जन सामान्य की भूमिका व व्यक्तिगत प्रयासों के बारे में चर्चा की गई तथा पर्यावरण के मुख्य घटक जल, वायु व भूमि के संरक्षण में आने वाली कठिनाईयों व उनके जमीनी स्तर पर निराकरण के संबंध में अनेक सुझाव दिये गये । संगोष्ठी में आये पर्यावरणविद ने प्राकृतिक धरोहर के सीमित व विवेकपूर्ण उपयोग के संबंध में अपने अनुभवों से भी अवगत कराया तथा वृक्षारोपण व सामाजिक वानिकी को कैसे कारगर बनाया जाये इस बाबत अनेक सुझाव दिये ।

05. विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन :

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर दिनांक 05.06.2013 को केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, मध्य प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल एवं जवाहर बाल भवन

संस्था द्वारा पुनः संयुक्त रूप से जवाहर बाल भवन के सभागार में कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस श्रृंखला के सभी कार्यक्रमों का समग्र रूप में स्कूली बच्चों के साथ आयोजन किया गया । कार्यक्रम में सर्वप्रथम आंचलिक अधिकारी द्वारा प्रतिभागी बच्चों व अन्य अतिथियों को प्रदूषण नियंत्रण के क्षेत्र में कार्यालय द्वारा किये जा रहे प्रयासों व योजनाओं के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रदान की तथा ऊर्जा व जल संरक्षण के संबंध में दैनिक जीवन में किये जा सकने वाले कार्यो की जानकारी प्रदान की गई, तथा खाद्यान्न सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला ।

कार्यक्रम के प्रारंभ में उपस्थित बच्चों को पॉवर पॉइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, नगरीय ठोस अपशिष्ट, इलेक्ट्रॉनिक व बायोमेडिकल वेस्ट, ओजोन परत क्षरण, ग्लोबल वार्मिंग के कुप्रभाव तथा जैव विविधता पर पड़ने वाले पर्यावरणीय प्रभावों के बारे में जानकारी प्रदान की तथा विश्व परिदृश्य की वर्तमान स्थिति से बच्चों को अवगत कराया । इसी विषय पर आधारित पर्यावरणीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया । इसमें सभी आयु वर्ग के स्कूली बच्चों द्वारा बहुत ही उत्साह से भाग लिया गया तथा सही उत्तर देने वाले 30 बच्चों को पुरस्कृत किया गया ।

भोपाल के निकट मंडीदीप औद्योगिक क्षेत्र में स्थित मेसर्स ल्यूपिन लैब के परिसर में आयोजित विश्व पर्यावरण दिवस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री आर.एस. कोरी, आंचलिक

अधिकारी द्वारा की गई । इस अवसर पर केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की गतिविधियों के साथ–साथ पर्यावरण की अद्यतन चुनौतियों के संबंध में विस्तृत चर्चा की गई

06. वाहन प्रदूषण नियंत्रण कार्यक्रम :

शहरी क्षेत्रों में आवागमन के साधनों की वृद्धि बहुत तेजी से हो रही है तथा इनसे उत्सर्जित होने वाले पर्यावरण प्रदूषकों से स्थानीय स्तर के वातावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है । वायु प्रदूषण के कारणों तथा इसके स्तर में कमी लाने के उद्देश्य से दिनांक 07.06.2013 को केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, आंचलिक कार्यालय तथा क्षेत्रीय कार्यालय मध्य प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, भोपाल द्वारा संयुक्त रूप से वाहनों से होने वाले वायु प्रदूषण की रोकथाम हेतु जन जागृति कार्य किया तथा इसके अन्तर्गत पेट्रोल से चलने वाले दुपहिया व तिपहिया वाहनों के उत्सर्जन का निःशुल्क प्रबोधन कार्य किया गया तथा

वाहन की सही देखभाल से किस तरह वाहन से उत्सर्जित प्रदूषण को कम कर सकते है इस संबंध में जानकारी प्रदान की गई । इस अवसर पर वाहन चालकों को पेम्फलेट भी वितरित किये गये जिसमें ईंधन बचाने व अधिक कुशलता से उसके उपयोग के संबंध में जानकारी प्रदान की गई । इस दौरान अनेक वाहन चालको से पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न पहलुओं पर भी चर्चा की गई तथा उन्हें अन्य लोगो को भी प्रेरित करने हेतु अनुरोध किया गया । वाहन चालकों द्वारा यह भी बताया गया कि यद्यपि

वाहन के रख–रखाव के माध्यम से वे प्रदूषण को दूर करने का पूरा प्रयास करते है परन्तु कभी–कभी मिलावटी ईंधन के कारण वे अप्रत्यक्ष रूप से प्रदूषण का कारक बनते है ।

व्यक्तिगत स्तर पर किये गये प्रयासः कार्यालय के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों ने व्यक्तिगत स्तर पर भी शहर के अन्य पर्यावरणीय संस्थानों द्वारा आयोजित कार्यक्रम जैसे साईकिल रैली, संगोष्ठी, रहवासी कल्याण समिति की बैठकों में भाग लिया तथा जनभागीदारी के माध्यम से इस दिवस को सार्थक बनाने का प्रयास किया गया ।

दिनांक 23.062013 को भोपाल के निकट स्थित केरबा जलाशय में चौपहिया वाहन (जीप व जिप्सी) की मड चैंलेस रेस का आयोजन स्थानीय खेल संगठन द्वारा किया गया था जिसका उद्देश्य अप्रत्यक्ष रूप से यह बताना था कि जो जलाशय वर्ष भर पानी से भरे होते थे वे अल्प वर्षा या सही जल प्रबंधन न होने से वे अपना अस्तित्व खो रहे हैं तथा

अब उसमें वाहन चालन भी किया जा सकता है । इस अवसर पर लगभग 20 से 25 हजार लोग इस आयोजन को देखने आये थे तथा जन–जागरूकता के प्रयास में इस अवसर पर उपस्थित जन समुदाय से बैनर व पेम्फलेट वितरण के माध्यम से जल

स्त्रोतों को प्रदूषण से बचाने की अपील की गई तथा उपस्थित लोगों द्वारा भी पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनसामान्य की जिम्मेदारी की अनुभूति करते हुए पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान करने का आश्वासन दिया गया ।

आंचलिक कार्यालय, भोपाल द्वारा जन जागरूकता के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के इस पुनीत कार्य को अनवरत बनाये रखने के उद्‌देश्य से वर्ष भर इस तरह के अन्य कार्यक्रम निरन्तर जारी रखे जायेंगे क्योंकि केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड स्वच्छ पर्यावरण के लिये प्रतिबद्ध है ....

कार्यक्रम की अन्य झलकियां

000014

पत्रिका

SUNDAY, 02.06.13

रंग और कूची से कहा सेव ट्री

विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में पेंटिंग स्पर्धा

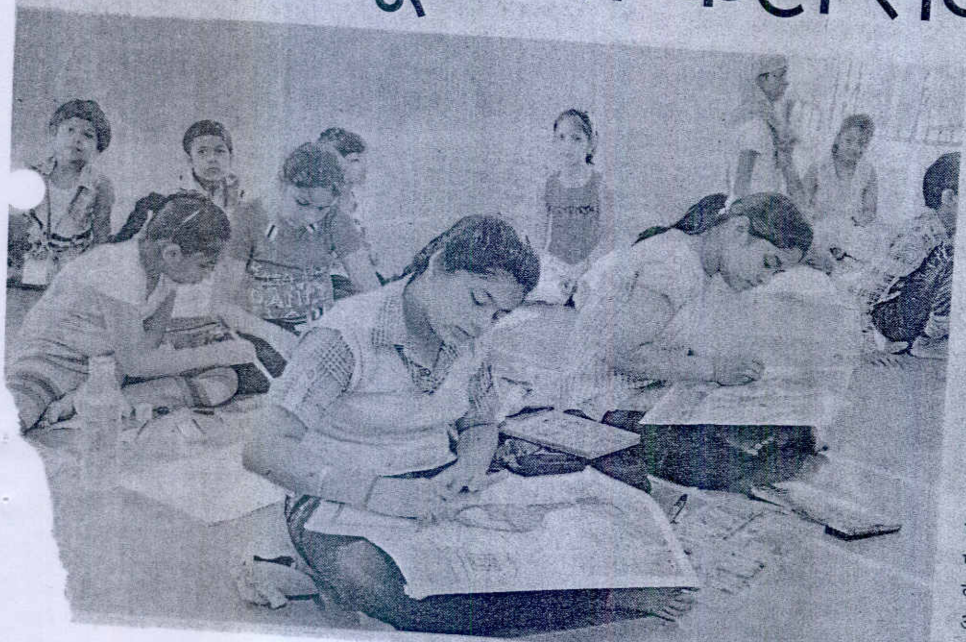

plus रिपोर्टर
bhopalplus@patrika.com

रंग-बिरंगे वाटर एवं स्टिक कलर से चित्र बनाते स्टूडेंट्स। पर्यावरण संरक्षण, पौधरोपण आदि का संदेश देती बच्चों की पेंटिंग्स। यह नजारा था शनिवार को जवाहर बाल भवन में आयोजित पेंटिंग कॉम्पिटीशन का। इसका आयोजन विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में मप्र एवं केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। इस प्रतियोगिता में विभिन्न स्कूल्स के करीब 100 स्टूडेंट्स ने पार्टिसिपेट किया। स्टूडेंट्स ने पर्यावरण संरक्षण को लेकर अपनी कल्पनाओं को आकार दिया। इससे पहले कार्यक्रम की शुरुआत में कार्यालय की वैज्ञानिक डॉ. टी. सूफी ने इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस की थीम (थिंक एट सेव) पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि खाद्य सुरक्षा के प्रति जनता को जागरूक व सचेत रहना चाहिए। वहीं, अन्य कार्यक्रमों में पौधरोपण, पर्यावरण संरक्षण एवं रेडियो परिचर्चा जागरुकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस दौरान मप्र नियंत्रण बोर्ड के सदस्य एच शिवहरे, क्षेत्रीय अधिकारी आलोक सिंघई, जवाहर बाल भवन के संयोजक एसएन दांगी और बोर्ड के अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित रहे।

पत्रिका

SATURDAY

01.06.13

बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता आज

भोपाल। मध्यप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की ओर से विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में जनचेतना अभियान के तहत स्कूली छात्र-छात्राओं के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। एक जून को जवाहर बाल भवन तुलसी नगर में सुबह 8.30 बजे शुरू होने वाली इस प्रतियोगिता में स्कूली स्टूडेंट्स हिस्सा ले सकते हैं।

दैनिक भास्कर भोपाल, गुरुवार, 6 जून, 2013

पर्यावरण को लेकर क्विज का आयोजन

जवाहर बाल भवन में केंद्रीय प्रदूषण बोर्ड के सहयोग से बच्चों को पर्यावरण के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर पर्यावरण विषय पर क्विज का आयोजन किया गया। जिसमें सही उतर देने वालों को पुरस्कार वितरित किए गए। क्विज में पांच सौ बच्चों ने हिस्सा लिया। जून 2013 को थिंक ईट सेव विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता में चयनित बच्चों को इस अवसर पर पुरस्कृत किया गया। बच्चों को भोजन के महत्तव और भोजन के वेस्टेज से बढ़ते कार्बन फुट प्रिंट की जानकारी दी गई। साथ ही पर्यावरण के प्रति सकारात्मक नजरिया, प्रकृति संरक्षण की जानकारी दी।

पत्रिका
THRUSDAY
06.06.13

जवाहर बाल भवन में पर्यावरण क्विज का आयोजन किया गया।

हमारी राजधानी के बारे में कुछ चिंताएं, कुछ समाधान भी

पत्रिका TALK SHOW

संवारें अपने हिस्से की हरियाली

विश्व पर्यावरण दिवस की पूर्व संध्या पर मंगलवार को पत्रिका कार्यालय में टॉक शो का आयोजन किया गया। इस शो में शहर के ख्यात पर्यावरणविदों ने 'पर्यावरण संरक्षण में व्यक्तिगत जिम्मेदारी' विषय पर परिचर्चा की। विशेषज्ञों ने विभिन्न पहलुओं पर गंभीर चिंतन किया। उन्होंने बताया रकारी आंकड़ों में पर्यावरण संरक्षण की जो तस्वीर पेश की जा रही झूठी है। असल तस्वीर में स्थिति कुछ और ही है। यदि समय रहते ण के प्रति सचेत नहीं हुए, तो हालात भयावह हो सकते हैं। होना चाहिए कि हर व्यक्ति संसाधनों की बचत करे और पर्यावरण क्षण के नए और कारगर विकल्प खोजे। जानते हैं विशेषज्ञों की राय उन्हीं की जुबानी...

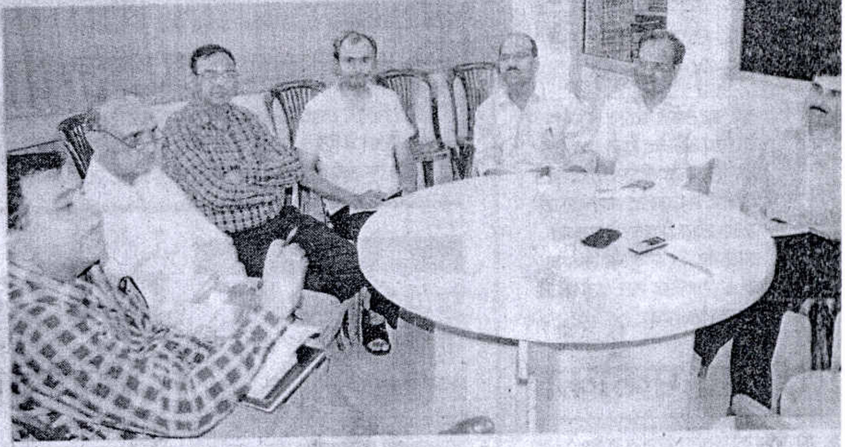

करें वाटर बजटिंग

पश्चिमी देशों और हमारी आर्थिक पृष्ठभूमि कहीं से कहीं तक नहीं मिलती। इस कारण हमें अपने ही स्तर पर पर्यावरण की चुनौतियों से निपटना है। इसके लिए पहले तो हम वाटर बजटिंग करें और दूसरा संसाधनों के सीमित उपयोग पर जोर दें। गंगा के शुद्धिकरण के लिए 25 हजार करोड़ रुपए खर्च हो चुके हैं, लेकिन नतीजा जीरो है। व्यक्तिगत स्तर पर जब लोग अपनी जिम्मेदारी समझेंगे, तभी पर्यावरण को सुरक्षित बनाया जा सकता है।

आरएस कोरी,
जोनल ऑफिसर, सीपीसीबी

बचपन से दें शिक्षा

बेतहाशा बढ़ते इंडस्ट्रलाइजेशन और पॉल्यूशन को देखते हुए पर्यावरण को बचाना बेहद जरूरी है। इसके लिए पहले हमारे पास फंड के सोर्स नहीं थे, लेकिन आज सभी चीजें हैं। परेशानी है, तो यह कि व्यक्तिगत स्तर पर हम खुद ही अवेयर नहीं हैं। इससे पर्यावरण संतुलन पर सीधा-सीधा असर देखा जा रहा है। समाज, शिक्षा और आर्थिक स्तर पर पर्यावरण के बारे में सोचा जाएगा, बदलाव तभी संभव है। पहली क्लास से ही पर्यावरण संबंधी शिक्षा दी जानी चाहिए।

- वीबी भट्ट,
एसएम, एनएचडीसी लि.

जिम्मेदार करें भरपाई

विकसित देश प्रदूषण में अव्वल हैं और वे चाहते हैं कि विकासशील देश पेड़ लगाकर इसकी भरपाई करें। जबकि पर्यावरण से होने वाले खतरे की भरपाई उसी देश को करनी चाहिए, जिसने ये परिस्थितियां निर्मित की हैं। हमें राशि के अनुसार पेड़ लगाने चाहिएं। भोपाल की बात की जाए, तो बड़ी झील का एरिया निरंतर अतिक्रमण की चपेट में आता जा रहा है। इसका पानी भी पीने लायक नहीं रहा। यह स्थिति आने वाले सालों में घातक होगी।

- प्रो. पीसी कोटवाल
आईआईएफएम भोपाल से रिटायर्ड

जीवनचर्या बनाएं

सिर्फ बातों से पर्यावरण को नहीं बचाया जा सकता। मैं सरकारी नौकरी छोड़कर पर्यावरण के कार्य कर रहा हूं। अब तक 3900 नीम के पेड़ लगा चुका हूं। इसी तरह हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी समझते हुए कम से कम संसाधनों का उपयोग कर ज्यादा से ज्यादा पेड़ पौधे लगाने चाहिए। नीम एक ऐसा पौधा है, जो अपने आप फल-फूल जाता है। इसके अलावा कई अवसरों पर आप निशानी के तौर पर एक पौधा जरूर लगा सकते हैं।

- प्रोफेसर सुभाष सी पांडे,
पर्यावरणविद, गीतांजलि गर्ल्स कॉलेज

बेजा दुरुपयोग रुके

हमें छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने की जरूरत है। हम रोजमर्रा के जीवन में जल, वायु और अन्य संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करते हैं। घरों में शौच का फ्लेश दबाते ही दस लीटर क्लीन वाटर वेस्टेज वाटर में तब्दील हो जाता है। जबकि हम इसे रीसाइकिल के जरिए अन्य कार्यों में उपयोग किए हुए पानी को ही शौच में इस्तेमाल कर सकते हैं। इस तरह के छोटे-छोटे लेकिन कारगर कदम यदि हर व्यक्ति उठाए, तो बहुत हद तक पर्यावरण को संवारा जा सकता है।

आरके श्रीवास्तव,
पर्यावरणविद

समाज को लौटाएं भी

हर व्यक्ति कम से कम इतने पेड़ तो लगाए, जितनी लकड़ी उसके दाह संस्कार में काम आनी है। आने वाले सालों में हमारी सबसे बड़ी चुनौती यही होगी। हमें पर्यावरण बचाने के लिए व्यक्तिगत स्तर पर अपने घर से शुरुआत करनी चाहिए। जो लोग इस दिशा में सक्रिय हैं, वे घर -घर जाकर पौधे लगाने के लिए लोगों से आग्रह कर सकते हैं। मैंने अपनी कॉलोनी में करीब दो सौ पौधे लगाए हैं। ऐसे प्रयास सामूहिक तौर पर करने होंगे।

- डॉ. अनूप हजेला
पर्यावरणविद

ढांचा मजबूत करें

जब तक अपनी मूलभूत आवश्यकता से ऊपर नहीं उठेंगे, पर्यावरण की बात करना बेमानी है। पहले हमें अपनी सामाजिक पृष्ठभूमि इतनी मजबूत करनी होगी कि पर्यावरण हमारे लिए महत्वपूर्ण नजर आने लगे। दूसरे देशों में इसलिए पर्यावरण के लिए जागरुकता है कि वहां बेसिक नीड के लिए आदमी संघर्ष नहीं करता। यहां सिर्फ सरकारी फाइलों में पर्यावरण की बात सिमट जाती है। यदि वाकई प्रकृति को बचाना है, तो सामाजिक ढांचा भी मजबूत करना होगा।

डॉ. प्रेमकुमार श्रीवास्तव,
मप्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड

संस्कारों से जोड़ें

पर्यावरण के प्रति चिंता बहुत हद तक हमारे संस्कारों से जुड़ी है। आज व्यस्तता इतनी हो गई है कि माता-पिता के पास बच्चों के लिए पर्यावरण के बारे मे बताने और उन्हें उनकी जिम्मेदारी समझाने का समय नहीं है। आगे जाकर जब बच्चे जवान होते हैं, तब उन्हें समझ में आता है। कहने का मतलब यह जिम्मेदारी हम अपने व्यवहार में लानी होगी। हर व्यक्ति को पौध अपनी जिम्मेदारी समझकर रोपना चाहिए, न वि उसे एहसान मानकर।

- अमित सक्सेना,
नर्सरी संचालक